RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 9 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 4 अगस्त 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

गाँव की सरकार के चक्कर में आपसी वैमनस्यता न हो

कार्यालय प्रतिनिधि

उत्तराखण्ड में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के साथ ही गाँव की सरकार बन चुकी लेकिन लोगों के बीच मची रार अभी जारी है। चुनाव के चक्कर में आपसी वैमनस्यता न हो, इसको लेकर सजगता जरूरी है।

ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत, जिला पंचायत के लिये लगभग 70 प्रतिशत तक मतदान हुआ। मतदान के लिये वह मतदाता भी उत्साह के साथ अपने ग्रामों को आए जो नौकरी-पेशा बाहर हैं। ग्राम स्तर के चुनाव में यही खास बात है कि एक-एक वोट पर सबकी नजर होती है और किस घर का वोट किसके पाले में जा सकता है, इसको लेकर अनुमान लगाया जाता है। साथ ही एकदम निकट के लोगों का एकसाथ चुनाव मैदान में होना वोटरों के लिये बहुत कठिन निर्णय का क्षण होता है। इसके बाद क्षेत्र पंचायत के लिये भी इसी प्रकार का दबाव दिखाई दिया। जिला पंचायत की सीटों में धनबल के साथ जिस प्रकार की तैयारी दिखाई दी उससे यह साफ है कि चुनाव बहुत खर्चीला हो चुका है। पार्टी के समर्थित उम्मीदवारों के अलावा अपने बूते लड़ने वालों ने भी जिस तरह से चुनाव में ताकत लगाई थी, उसने नजदीक के लोगों को भी बांटने का काम किया है। अब सदस्यों के परिणामों के बाद ब्लाक प्रमुख, जिला पंचायत अध्यक्ष पद को लेकर जिस प्रकार की घेरबाड़ पार्टी स्तर पर होने लगी है वह भी कम रोचक नहीं है। ग्राम स्तर से लेकर जिला स्तर तक सरकारी योजनाओं का लाभ अपने क्षेत्र को दिलवाने के लिये जनप्रतिनिधि बनने का दावा करने वाले कितनी उठा-पटक इस चुनाव में कर चुके हैं सबने देखा है। ऐसे में यही कामना होनी चाहिये कि आम जन आपसी मन-मुटाव न करें।

भारत के मीलपत्थर

महाभारत में धर्म किसके पास था

सूर्यकान्त बाली

संस्कृत में एक कहावत है- यतो धर्मस्ततो जयः, जहाँ धर्म है,वहाँ विजय निश्चित है। महाभारत पढ़ जाएँ तो आपको इन्हीं या ऐसे शब्दों में यह कहावत कई बार पढ़ने को मिल जाएगी। यह कथन कोई आसमान से नहीं टपका। देखने को मिल ही जाता है कि सत्य के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति जीवन से एक बार विजयी अवश्य होता है। अन्यायी को बार-बार विजयी होता देखकर भी सत्य के पथिक को एक उम्मीद सत्य के मार्ग में बाँधे रखती है कि कभी तो जीत होगा और जब होती है तो वह ऐतिहासिक मान और बना दी जाती है। उसी में से यह कहावत चल पड़ी है।

पर खुद इस कहावत में एक अन्याय भी हुआ है कि कई बार विजयी पक्ष को सत्य और धर्म का पक्ष मान ही लिया जाता है, क्योंकि धर्म की जय होनी ही है। पाण्डवों के साथ कुछ-कुछ ऐसा ही हो गय है। चूँकि पाण्डव जीते और धर्म की जीत होनी ही है, इसलिए पाण्डवों का पक्ष धर्म मान लिया गय। तात्पर्य यह नहीं कि कौरव धर्मात्मा और पुण्यात्मा थे और पाण्डव नहीं। दोनों में अन्तर था और बहुत था। पर पाण्डव इसलिए जीते कि वे सही और धर्मात्मा थे, इस बात को खुद व्यास और उनकी टीम ने भी अतिरिक्त महत्व कभी नहीं दिया। महाभारत परवर्ती संस्कृत साहित्य में तो पाँसा ही पलटा हुआ नजर आता है। एक नाटक के रूप में युधिष्ठिर ने संस्कृत साहित्यकारों को कभी आकृष्ट नहीं किया। जबकि भास के एक नाटक ऊरूभंग के तो नायक ही दुर्योधन हैं और नाटककार की सहानुभूमि भी उन्हीं के साथ है। भारवि के महाकाव्य किरातार्जुनीयम में नायक तो अर्जुन ही हैं, पर काव्य में जहाँ युधिष्ठिर की अच्छी भद पिटी है, वहाँ दुर्योधन को अति लोकप्रिय और कुशल प्रशासक दिखाया गया है। भीम को नायक बनाकर नाटक लिखे गये। मसलन भास का ही एक नाटक है मध्यम व्यायोग और भट्टनारायण का नाटक है वेणीसंहार। पर युधिष्ठिर का खाता संस्कृत साहित्य में नहीं खुला। क्या ऐसे विजेता पर हैरानी नहीं होती कि जिसे न तो क्लासिकल साहित्य में और न ही लोकसाहित्य में वह स्थान मिल पाया जो पराजित दुर्योधन को मिला?

पर जैसे पाण्डवों की जीत उनके पक्ष आवश्यक रूप से धर्म का पक्ष सिद्ध नहीं करती, वैसे ही दुर्योधन को परवर्ती साहित्य में मिली सहानुभूति उसके पक्ष को बलवान नहीं बनाती। महाभारत काल से ही इस पर बहस जारी है कि कौन सही था। यहाँ सही का एक ही मतलब है कि हस्तिनापुर के राजसिंहासन के असली वारिस कौन थे, दुर्योधन या युधिष्ठिर? वह दुर्योधन जिनके पिता धृतराष्ट्र अन्धे होने के कारण राज्य से पहले वंचित कर दिए गए थे और पाण्डु की मृत्यु के बाद राजा बना दिए गए या वह युधिष्ठिर जो राजा पाण्डु के और इस परिवार के ज्येष्ठ पुत्र थे? इसमें कई उपप्रश्न भी फँसे पड़े हैं। क्या असली राजा धृतराष्ट्र थे, जो नेत्रहीन होने के कारण राजा नहीं बन सके और पाण्डु को उनके प्रतिनिधि के रूप में राजा बनाया गया या कि पाण्डु ही अभिषिक्त बाद में धृतराष्ट्र ने किया? उपप्रश्न यह भी है कि अगर पाण्डु के मारने के बाद राजा बनाए जाने पर नेत्रहीनता धृतराष्ट्र के आड़े नहीं आई तो उन्हें शुरू में ही राजा बनाने के सवाल पर क्यों आड़े आई? इन प्रश्नों का उत्तर अगर मिल जाता तो फिर महाभारत का युद्ध ही क्यों होता तो फिर यह बहस आज तक क्यों चलती रहती? महाभारत का प्रबन्ध काव्यत्व इसी में है कि वह हमारे सामने सवाल तो खड़े कर देता है पर हमें अपने उत्तरों का बंधुआ नहीं बनाता और जवाब ढूँढने के लिए खुला छोड़ देता है।

फिर आमतौर पर युधिष्ठिर को धर्मराज और दुर्योधन को खलनायक की छवि क्यों मिली? यह तो दुर्योधन के निन्दक भी मानेंगे कि कि वह अहंकारी बेशक थे पर मूर्ख नहीं थे। हस्तिनापुर के राजसिंहासन पर उन्होंने अगर अपना दावा मरते दम तक नहीं छोड़ा तो इसका कारण मिथ्या अहंकार नहीं, कहीं न कहीं दावे के सही होने के प्रति पूरा यकीन था। महाभारत में युधिष्ठिर ने अपने दावे को कभी भी इस यकीन और तीव्रता के साथ नहीं रखा, जैसे दुर्योधन ने रखा। संस्कृत साहित्य में दुर्योधन की छवि राज्यवंचक और युधिष्ठिर की राज्य वंचित की कभी नहीं उभरी। लोगों के बीच दोनों नायकों के प्रति रागद्वेष का आधार वंचक-वंचित होना प्रायः नहीं रहा। अगर युधिष्ठिर राज्य के प्रति इतने ही दावेदार थे, तो सत्य से कभी न डिगने वाले इस व्यक्ति को पाँच गाँवों से सन्तोष की पेशकश कभी नहीं करनी चाहिए थी। यानी कुल मिलाकर मामला इतना उलझा हुआ है कि एक लम्बी बहस भी आपको कहीं पहुँचाती नहीं।

यही हाल महाभारत युद्ध का है। कुरुक्षेत्र में अठारह-अक्षौहिणी सेना मर गई, पर उल्लेखनीय मृत्यु सिर्फ पाँच लोगों की रही- भीष्म, अभिमन्यु, द्रोण, कर्ण और दुर्योधन। अर्जुन और भीम के

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

सरकारी स्कूलों को मर्ज करने का सरकारी फरमान और जनता का प्रदर्शन

उत्तराखण्ड में कक्षा एक से बारह तक के सरकारी स्कूलों को मर्ज एवं कलस्टर करने की योजना का चारों ओर विरोध हो रहा है। असल में कम छात्र संख्या वाले विद्यालयों को दूसरे स्कूल में मर्ज करने का शासन का फरमान है और कहा जा रहा है कि इससे सुधार होगा और बचत होगी लेकिन मर्ज करने की इस हड़बड़ी में अधिकांश पुराने विद्यालयों में ताला लगना तय है। साथ ही कई जगह शिक्षा के लिये बच्चों को काफी दूर तक पैदल यात्रा करनी होगी। ऐसे में प्रदेश के सभी जनपदों में जबर्दस्त विरोध प्रदर्शन होने लगा है। इस विरोध में छात्र-छात्राओं के अलावा अभिभावक और क्षेत्रवासी सड़कों पर उतर आए हैं। उनका कहना है कि विद्यालय को कलस्टर में शामिल नहीं होने दिया जायेगा। कई सालों से बच्चे इन स्कूलों में पढ़ रहे हैं। अब सरकार मीलों दूर कलस्टर में विद्यालय को शामिल करने की सोच रही है। इस आन्दोलन को आगे बढ़ाते हुए परिवर्तनकामी छात्र संगठन का कहना है कि सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत कम छात्र संख्या वाले स्कूलों को मर्ज कर कलस्टर योजना बना रही है, इससे हजारों स्कूलों बन्द हो सकते हैं। सरकार का तर्क है कि इससे बेहतर संसाधन और शिक्षा उपलब्ध होगी लेकिन यह शिक्षा के मौलिक अधिकार और सामाजिक जिम्मेदारी से मुंह मोड़ना जैसा है।

शिक्षा व्यवस्था की दुर्दशा करने में हमारी सरकारों का दोष कम नहीं है। प्राइमरी से लेकर उच्चशिक्षा तक राजनीतिक दबाव बनाते हुए स्कूल-कालेज जगह-जगह खोलने का खेल होता रहा है। सुनने में अच्छा लगता है कि स्कूल खुल चुका लेकिन जो विद्यालय पहले से हैं वहाँ सुविधाओं का न होना, शिक्षक व कर्मचारियों की कमी का रोना मचा हुआ है। सरकारी स्कूलों का मतलब एक कर्मकाण्ड सा होकर रह गया और बहुत से स्कूल ढोए जा रहे हैं ताकि नौकरी बची रहे। शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। ऐसे में उद्योगपतियों ने सुविधाओं का प्रदर्शन करते हुए प्राइवेट स्कूलों के रूप में अपनी जगह बना ली है। सक्षम लोगों ने अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में भेज दिया और रहे-बचे सरकारी स्कूलों में जा रहे हैं। इसमें कैसे मान लिया जाए कि शिक्षा के क्षेत्र में विकास हो रहा है।

हो सकता है सारे हालातों को देख सरकार ने स्कूलों को मर्ज करने का फार्मूला निकाला हो लेकिन हड़बड़ाट में। सरकार को चाहिये जो भी सरकारी विद्यालय हैं उनमें सुविधाएं और रिक्त पदों को भरते हुए बराबर निगरानी रखी जाए। ताकि सरकारी स्कूलों की ओर हर किसी के कदम बढ़ें और शिक्षा के यह मन्दिर आम-खास सबके लिये प्रिय हों।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

भारतीय मूल के डाक्टर पर आरोप

न्यूयॉर्क। अमेरिका में भारतीय मूल के एक डाक्टर पर गम्भीर चिकित्सा धोखाधड़ी, ओपिओइड के अवैध वितरण और दवा लिखने के बदले मरीजों से यौन सम्बन्ध बनाने का आरोप लगाया गया है। 51 वर्षीय रितेश आलरा को अमेरिकी अदालत की सुनवाई के बाद घर पर ही नजरबन्द कर दिया गया है।

भगोड़ों के खिलाफ दोगुने नोटिस

नई दिल्ली। सीबीआई के अनुरोध पर जारी किए गए इन्टरपोल के रोड नोटिस की सालाना संख्या वर्ष 2023 के बाद से दोगुने से भी ज्यादा हो गई है। यह इन्टरपोल महासभा और जी 20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी के दौरान हुए विचार विमर्श के आधार पर परिष्कृत तकनीक को अपनाकर भगोड़ों की तलाश की दिशा में देश में आए बड़े बदलाव को दर्शाता है।

6 बैडमिंटन खिलाड़ी प्रतिबन्धित

नई दिल्ली। जर्मनी के राइन-रूहर में चल रहे विश्वविद्यालय खेलों (डब्ल्यूयूजी) में मिश्रित टीम कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय बैडमिंटन टीम चयन को लेकर विवादों में घिर गई है क्योंकि चुने गए 12 खिलाड़ियों में से 6 को कथित प्रशासनिक चूके कारण भाग लेने से रोक दिया गया है। अब ये खिलाड़ी विश्व विद्यालय खेलों में भाग नहीं ले पाएंगे।

नया उपराष्ट्रपति चुना जाएगा

नई दिल्ली। जगदीप धनखड़ के इस्तीफे के बाद नए उपराष्ट्रपति का चुनाव होना है। अधिसूचना के तीस दिन के अन्दर यह चुनाव हो जायेगा। चुनाव आयोग की प्रक्रिया में बाद दोनों सदन इसके लिये तैयार हैं। इससे पहले धनखड़ ने अचानक अपने पद से इस्तीफा देकर चौंका दिया था। स्वास्थ्य कारणों से उन्होंने पद छोड़ने की बात कही लेकिन राजनीतिक गलियारों में इसके अन्य मतलब निकाले जा रहे हैं।

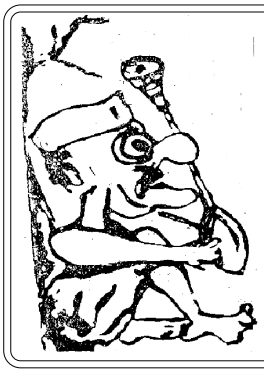

फसक

दाज्यू, हंगामेबाजी तो फैशन हो गया ठैरा

लपट-झपट करते हुए पार लगने की कोशिश करते हैं बल

दाज्यू, शहर के चौराहे में लोड्योव हो रही थी। हमने सोचा किसी को सच के उजागर होने पर गुस्सा उतारा जा रहा है लेकिन पता चला कि स्कूटी में न बैठाने पर युवती ने मादर-फादर गाली बकनी शुरू कर दी और मिट्टी-पत्थर उठाकर मारने लगी। उसके बाद दूसरों ने भी पत्थर फैंकने शुरू कर दिये और तीन-चार ने मोबाइल निकाल कर वीडियो बनाते हुए अपने को पत्रकार बताया। दाज्यू, जमाना क्याप्प हो चुका है। हंगामेबाजी तो फैशन हो गया ठैरा। पता नहीं कौन किसको कब फतोड़ने लगे और बिना समझे-बूझे दूसरे भी पिल पड़ें। इस मौके पर लपट-झपट करते हुए पार लगने की कोशिश भी करते हैं बल। इसलिए बहुत सतर्क रहने की जरूरत है।

खटीमा बाजार में मिठाई की दुकान पर हंगामा हो गया। ग्राहक ने बासी मिठाई बेचने का आरोप लगाते हुए गुर्राना शुरू कर किया था कि फूट इंस्पैक्टर ने सैम्पल को जाँच के लिये भेज दिया। भगवान जाने क्या मामला है। तभी तो कह रहे हैं कि क्याप्प हो रहा है। रामनगर में एक रिसॉर्ट पर कब्जा करने के प्रयास का आरोप लगाया जा रहा है। रिसॉर्ट स्वामी ने अमगढ़ी स्थिति उनके रिसॉर्ट पर दो व्यक्तियों के साथ संयुक्त उद्यम का समझौता था जो कानूनी रूप से समाप्त हो चुका है लेकिन उन लोगों ने सीसीटीबी कैमरे तोड़ने सहित कब्जे का प्रयास किया। झगड़ा दो हो रहा होगा लेकिन रंगत लेने के लिये कितने ही दिखाई देने लगते हैं। बहुत हाईटेक होने की बात हो रही है। दाज्यू, काशीपुर के ग्राम फरोजपुर में ड्रोन से रेकी के बाद नकाबपोश चोरी करने पहुँचा। वह तो अच्छा हुआ कि ग्रामीणों की सतर्कता से नकाबपोश भाग गये। इस बीच दिल्ली से बब्बू ने फोन पर बताया कि उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने पद छोड़ दिया। दाज्यू, कुछ दिन पहले ही तो वह नैनीताल घूमने आये थे और पूर्व सांसद महेन्द्र पाल से गले मिलते हुए भावुक हो गये। जीवन के मेले में सब लगा ठैरा।

दाज्यू, उत्तराखण्ड मुक्त विश्व विद्यालय के प्रोफेसर भूपेन सिंह ने कुलपति नेगी पर गम्भीर आरोप लगाये जिसका पत्र सोशल मीडिया पर वायरल होने लगा। हमारी समझ नहीं आ रहा है जब कुलपति को लेकर वर्षों से बहस छिड़ रही है तो उन्हें बार-बार सेवा विस्तार क्यों दिया जा रहा था। दाज्यू, प्रोफेसर ने सीधे भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए इस विश्वविद्यालय में हुई नियुक्तियों पर सवाल खड़े कर दिये हैं। दाज्यू, आप जानने ही वाले हुए कि बोलने वाला बोलता रहता है और दीमक चट्टम-चाट करती रहती है। अब मुक्त विश्वविद्यालय है तो वहाँ मुक्त बातें होने ही वाली ठैरी। कुलपति में कुछ न कुछ तो रहा ही होगा इसलिये उन्हें सरकार अपने साथ लपेटे रखना चाहा। बहुत उबाल आने पर लोहनी ज्यू को कुलपति बना दिया। भगवान भली करें। सब लपट-झपट का मन्तर होने वाला ठैरा। लपेट मारो तो कुछ नहीं हो सकता। उधर लोक गायक पवन सेमवाल का गीत भड्भड़ाट कर रहा है। दाज्यू, पहले नरेन्द्र दा के गीत ने भी फड्फड़ाट किया था। हम तो कह रहे हैं जोई-सोई लिख दो और सोई-जोई गा दो, सब चल जाने वाला ठैरा। परेशान जनता चटकारे के अलावा ले भी क्या सकती है। काशीपुर में एक व्यक्ति ने अपने को डीएम बताकर महिला और उसके परिजनों से 19 लाख रुपये ठग लिए। पीड़ित बता रहे हैं- 'नौकरी लगवाले और कृषि दवाओं की एजेंसी दिलवाने का झांसा दिया गया था।' दाज्यू, यही सब तो हो रहा है। देते-लेते समय में कोई नहीं कहता। जब लेन-देन में गजबजाट होने लगी तो मुंह खोलने वाले ठैरे। सितारगंज स्थित रा.महाविद्यालय में छात्रों ने हंगामा कर दिया। बीए चतुर्थ सेमेस्टर के 38 में से 31 फेल हो चुके हैं बल। फेल होने पर गुस्सा ही निकलने वाला ठैरा। दाज्यू, पटरी पार वाले कालेज में ताण्डव मचा हुआ है। गोलू बता रहा है- 'मुंह लगाए लोगों को आराम देकर शासन को ग्रामक सूचनाएं दी जा रही हैं।' समय आने पर चिट्टा खुलेगा। -तुम्हारा भुली झकरुवा

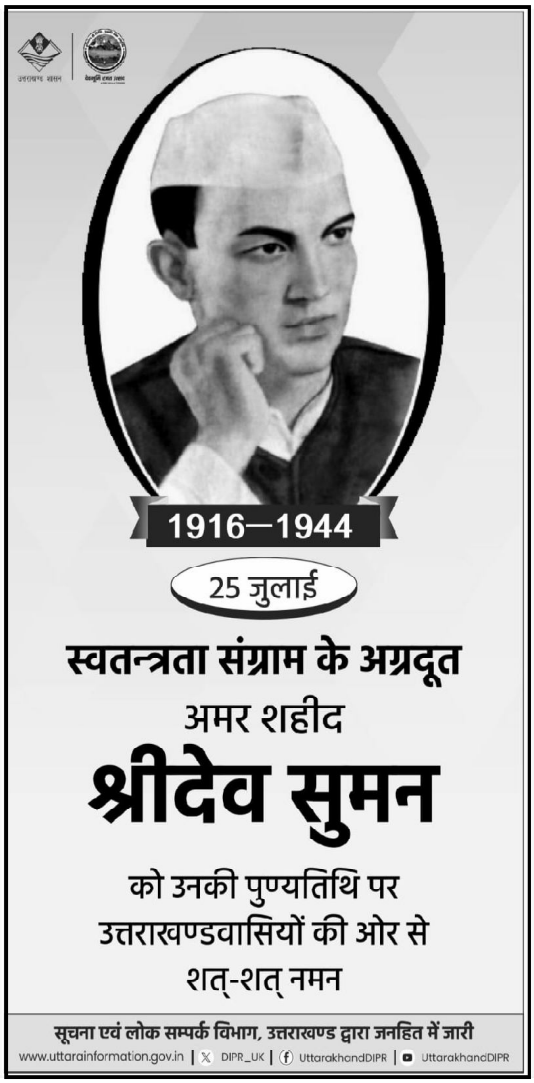

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सत्यकथा

मुनस्यारी स्थित पालतू-पशुओं के लिये कटघरा

जगदीश सिंह बजवाल

'कटघरा' (पालतू जानवर जो खेतीबाड़ी को नुकसान पहुँचाते है, पशु बन्दीगृह) तिकसैन में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के पास में तथा विकासखण्ड के सामने गांधी पार्क मैदान पहले जमाने में मुनस्यारी फुटबाल टुर्नामेंट के बीच कुछ बालीबाल मैच इसी में खेला जाता था। कुछ दूर अस्पताल की ओर तल्ला-मल्ला घोरपट्टा जाने वाले रास्ते पर ही 'कटघर' कटघरा बना था।

आज से चालीस-पचास वर्ष पूर्व पहाड़ों पर लोगो का आत्मनिर्भर जीवन -खेतीबाड़ी, पशुपालन, श्रमिक के रूप में आजिविका हेतु मेहनत था।

मुनस्यारी के शौकाओं के पास खेती बाड़ी तो नहीं के बराबर थी किन्तु अपने पैतृक धन्धा ऊनी कारोबार, आंशिक व्यापार, कुछ अपवाद परिवार किसानी भी करते थे। जिन्होने खेत अपने नाम कर लिए। क्षेत्र के अधिकांश लोगों की माली हालत अच्छी नहीं थी। शिक्षा के प्रचार-प्रसार के बाद ही शौका समाज में काफी परिवर्तन आया। परिवार का खर्चा ऐन-केन प्रकारेण चलता था। गाँव में परिवार भरा-भरा, पलायन नाम की कोई चीज नहीं थी। गाँव के खेत-खलिहान आवाद किन्तु जीवन जीने के लिए संघर्ष, जद्दोजहद का था।

मुनस्यारी तहसील मुख्यालय क्षेत्र में शौका बहुल गाँव तथा खेतीबाड़ी अधिकांश जिमदार (राजपूत) ही करते थे, जो पहले से ही इस कार्य में संलग्न थे। बन्दोबस्त के बाद मालिकाना हक भी इन्हें प्राप्त हो गया। गाँव का रिवाज हर परिवार में दुधारू गाय अवश्य रखता था (अभाव भोजन के काफी हिस्से की आपूर्ति कर लेता था। दूध, घी, दही, मक्खन की प्राप्ति हो जाती थी। घर पर उत्पादित वस्तुओं पर निर्भर जीवन स्वालम्बन ही था। सब्जी में प्याज, टमाटर जैसी चीजें आज की तरह दैनिक उपयोगी चीजें नहीं थी। लोगों का मौसमानुसार खान-पान निर्धारित होता था।

गाँव में लोग मवेशी, भेड़ बकरी, घोड़े-खच्चर, कुटीर उद्योग को आजिविका का साधन बना लेते थे। 'जिमदार लोग किसानी करते थे, उनके पास मवेशी अधिक होते थे। जिनकी आवश्यकता भी थी। मवेशियों को जंगल चुगाने के लिए 'ग्वाला' गाँव के लोग अपनी गाय उन्हें ही सुपुर्द करते थे, ग्वाले को महीने का निश्चित मेहनताना दिया जाता था।

किसान रात-दिन मेहनत कर अनाज का उत्पादन- धान, गेहूं, जौं, मडुवा, कोणी, झिंगुर, दाल, गहद, भट, सोयाबीन, चुवा आदि प्राप्त करता था। जो सालभर या कुछ महीनों तक भोजन की प्राप्ति करा देता।

मवेशियों से दूध, दही, घी, मक्खन प्राप्त करना तथा खेतीबाड़ी में भी उनका उपयोग खेत जोतने में करते थे। 'ग्वाला' का कार्य जानवरों को रोज जंगल ले जाना तथा चुगाकर समय से घर वापस दिनचर्या का हिस्सा था।

गाँव का ग्वाला आज जानवरों को दक्षिण दिशा की और चुगाने ले गया है, जहाँ सड़क से ऊपर अन्य गाँव के लोगों का लम्बी चौड़ी खेतीबाड़ी है। जंगल पहुँच कर ग्वाला समतल पत्थर पर गहरी नींद सो गया, 'कलुवा तथा धोलू' ताकतवर बैल चुगते-चुगते खेत उन खेत के बाड़े तक पहुँच गए।

कलुवा बैल, 'धोलू देख भाई ऊपर क्या गजब भोजन तैयार है। क्या करें! बाड़ा तोड़ कर घुस जाएं, बताओ।'

धोलू बैल, अरे ! गलत का अंजाम गलत होता है। लालच मत कर कलुवा।' सन्तोष करो।

कलवा बैल- दोस्त, मुझसे तो रहा नहीं जाता, मैं थोड़ी देर चुग लेता हूँ ज्यादा तेरी मर्जी। ग्वाला नींद में है किसान अभी है नहीं।

कलुआ ने तेज सींग से खेत का बाड़ा उखाड़ फैंका ओर खेत में चुगने लगा। धोलू अभी खेत से बाहर ही चुग रहा था। इतने में अन्य बीस-पच्चीस छोटे बड़े गाय-बछड़े यहाँ तक आ पहुँचे कलुआ को खेत में देखकर सभी खेत में जा घुसे, सभी मजे से भोजन खाने लगे थे। सब मस्त थे। अचानक दूर से आवाज सुनाई दी....

किसान- ओ हो ! हो! हो! हरामजादों ने तो खेतों का खतम कर दिया। हाथ में कठोर लट्ठ (छड़)लिए तेजी से खेत की ओर दोड़ता आ रहा था।

धोलू बैल 'बेटा कलुआ आज तेरे कारण सबकी फजीहत, मारे गए, आ गई सामत।'

कलुआ बैल- भागो-भागो! खेत में अफरा तफरी किसान के नजदीक जो आए पीटते जा रहे थे। सभी को बाड़े से बाहर कर किसान सबको एक साथ हांकते पीडब्लुडी सड़क से मुनस्यारी कटघरे को चलते बना। सब दरांती, राथी, गरमपानी, शान्तिकुंज, नानासेम होते हुए मुनस्यारी की तरफ बढ़ते गया। कलुआ, धोलू आगे आगे भाग रहे थे किसान के होथों पीटते छोटे बछड़े व कमजोर मवेशी थे।

धोलू बैल- देख कलुआ यार तू तो आगे है पीछे सब मार खाते आ रहे हैं।

कलुआ आत्मग्लानि महसूस करता चुपचाप चलता बना। सभी रास्ते में तमाशा बीन बने मवेशियों पर नजर अवश्य रख रहे थे।

तिकसैन बाजार से गुजरते किसान मवेशियों को हांकते ले जा रहे थे। कोई पूछता, भाई कहा ले जा रहे हों, किसान का एक ही उत्तर- 'इन हरामजादों को सजा देने 'कटघर' ले जा रहा हूँ।' और कहाँ !

चौकीदार- अरे भाई ये क्या?

ज्योतिष की बातें- 240

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य कोई भी ग्रह राशि परिवर्तन नहीं कर रहा है। सम्पूर्ण सप्ताह सूर्य व शुक्र मित्रराशि कर्क व मिथुन में, शनि समराशि मीन में, मंगल बुध व गुरु शत्रुराशि कन्या कर्क व मिथुन में क्रमशः तथा चन्द्रमा इस सप्ताह वृश्चिक धनु मकर व कुम्भ राशि में क्रमशः गोचर करेगा।

इस स्थाई स्तम्भ के अन्तर्ग प्रति सप्ताह जो ग्रहों का गोचरफल दिया जाता है वह स्थूलरूप से ही फलित होता है। सूक्ष्य विश्लेषण के लिये जातक की जन्म कुण्डली, महादशा आदि पर विचार करना पड़ता है।

रक्षाबन्धन- श्रावण शुक्लपक्ष पूर्णिमा अपराह्न व्यापिनी तिथि में रक्षाबन्धन का पर्व मनाया जाता है। इस कारण शनिवार 9 अगस्त 2025 को रक्षाबन्धन का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन ब्राह्मण अपने यजमान को और बहनें अपने भाई को उनकी सुरक्षा के लिये रक्षासूत्र बांधते हैं।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 130

भाषा विवाद की राजनीति

देश के अधिकांश प्रान्तों में भाषा विवाद निरन्तर चलता रहता है। मराठी व्यक्ति जब गुस्से में आता है तो वह हिन्दी में गाली देता है अर्थात् वह हिन्दी को श्रेष्ठ मानता है। इसी प्रकार जब हिन्दी भाषी पढ़ा लिखा आदमी गाली देता है तो अंग्रेजी में गाली देता है, शायद वह अंग्रेजी को श्रेष्ठ मानता है। कथित रूप से हिन्दी से तो घृणा है फिर भी अहिन्दी भाषी लोग हिन्दी फिल्में बड़े चाव से देखते हैं। वास्तव में हिन्दी फिल्में देख-देख कर ही पूरे देश ने हिन्दी सीखी है। सच्चाई तो ये है कि एक हिन्दी भाषी आदमी महाराष्ट्र में बाजार में, पास पड़ोस में, कोई व्यवहार करता है तो उससे सभी लोग हिन्दी में ही बात करने लगते हैं तो वह बेचारा मराठी सीखे कैसे! फिर भी मुम्बई में मराठी बोलने के लिए दबाव बनाया जाता है।

संविधान बनाते समय बाबा साहब अम्बेडकर संस्कृत भाषा को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे लेकिन कुछ नेताओं के विरोध के कारण ऐसा नहीं हो सका। फिर हिन्दी को संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया अर्थात् वर्तमान में देश के राजकीय कार्य की भाषा हिन्दी है। हिन्दी का विरोध वास्तव में राजनीतिक है।

संस्कृत भाषा का कहीं भी विरोध नहीं है और संस्कृत भाषा एक ऐसी भाषा है जिसको सीख जाने पर कोई भी व्यक्ति देश की समस्त भाषाओं को आसानी से समझ सकता है क्योंकि देश की समस्त भाषाओं के शब्द संस्कृत से ही व्युत्पन्न हैं। इसलिए पूरे देश में प्राथमिक स्तर की पढ़ाई मातृभाषा में हो तथा माध्यमिक स्तर से संस्कृत भाषा को पढ़ाया जाना चाहिए।

श्रावण पूर्णिमा पर संस्कृत दिवस के अवसर पर शुभकामनाओं के सहित। जयतु संस्कृतम्! जयतु भारतम्।।

-ओंकार नाथ कोष्टा

जोहार सांस्कृतिक एवं वेलफेयर सोसाइटी की पहल
स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित किया जायेगा

हल्द्वानी। जोहार सांस्कृतिक संगठन इस बार स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जोहार के 16 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को उनके परिजनों के माध्यम से सम्मानित कर शानदार पहल करने जा रहा है।

डी.एस.पांगती ने बताया है कि संगठन 16 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को उनके परिजनों के माध्यम से सम्मानित करेगा। ये आयोजन शिव सुन्दरम बैंकट हॉल दोनहरिया में होना है। आयोजन की रूपरेखा हरीश चन्द्र सिंह धर्मशक्तू द्वारा तैयार की जा रही है।

कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बारे में उद्बोधन के अलावा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां होंगी। जोहार शौका महिला संगठन देशभक्ति कार्यक्रमों की प्रस्तुति देगा। शहर में पहली बार आयोजित इस प्रकार के समारोह के लिये सभी से जुटने का आह्वान किया गया है।

आयोजन में जिन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को सम्मान होना है उनके परिजनों सहित विवरण इस प्रकार है-

स्व. त्रिलोक सिंह पांगती, प्रमोद पांगती
स्व. भवान सिंह धर्मशक्तू, श्रीमती रुकमणि धर्मशक्तू
स्व. दुर्गा सिंह रावत, हर्ष रावत अल्मोड़ा
स्व. गोपाल सिंह मर्तोलिया, रघुनाथ सिंह मर्तोलिया
स्व. हरीश सिंह जंगपांगी, नरेन्द्र जंगपांगी लक्ष्मी विहार हल्द्वानी
स्व. हरीश चन्द्र सिंह मर्तोलिया, मनोहर सिंह मर्तोलिया
स्व. जगत सिंह पांगती, प्रेमा पांगती छड़ेल
स्व. जोगा सिंह मर्तोलिया, श्याम सिंह मर्तोलिया
स्व. कुन्दन सिंह धर्मशक्तू, हरीश सिंह धर्मशक्तू
स्व. माधो सिंह जंगपांगी, कुन्दन सिंह जंगपांगी गुड़गांव
स्व. नरी राम, एडवोकेट देवेन्द्र कुमार
स्व. नाथों सिंह मर्तोलिया
स्व. त्रिलोक सिंह बृजवाल, भूपेन्द्र सिंह बृजवाल
स्व. तेज सिंह रलम्वाल
स्व. गुमान सिंह रलम्वाल

सम्मान समारोह से पूर्व सोसाइटी द्वारा प्रातः नियत समय पर जोहार मिलन केन्द्र में विगत वर्षों की भाँति झण्डारोहण किया जायेगा।

हाटकालिका में शिवपुराण कथा

गंगोलीहाट। महाकाली मन्दिर दरबार में शिवपुराण कथा में श्रद्धालुओं का तांता लगा हुआ है। कलश यात्रा के साथ इसकी शुरुआत हुई।

बिशंग में देवीजागर

लोहाघाट। बिशंग के कोट महरा गाँव में माँ भगवती का 22 दिवसीय जागर जारी है। सुई बिसंग के 25 गाँवों की करीब सौ साल बाद यह जागर है।

पिघलता हिमालय

पिघलता हिमालय ई-पेपर के लिये इसकी वेबसाइट देखी जा सकती है। www.pighaltahimalay.com

इसमें फेसबुक पर एकबार लाइक कर नियमित अपडेट प्राप्त की जा सकती है।

साथ ही कोई भी जानकारी/सूचना/समाचार/फोटो आप व्हट्सएप नं- 09458961490 पर WhatsApp कर सकते हैं

Email पिघलता हिमालय की मेल है- editorpighaltahimalay @ gmail.com

पिघलता हिमालय के सदस्य ध्यान दें-

पिघलता हिमालय की सदस्यता में सहयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने सन्देश/विज्ञापन के रूप में सहयोग दिया जा सकता है। सहयोग राशि सीधे बैंक में भेजने वाले राशि जमा करते ही उसकी सूचना हमारे मो0न0 पर भी दें ताकि मान्य हो सके। स्थानान्तरण होने की स्थिति में सदस्यगण अपना पता बदलने की सूचना भी समय से दें।

खाते का नाम- पिघलता हिमालय
बैंक का नाम- बैंक ऑफ इण्डिया
शाखा कार्यालय कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी(नैनीताल)
खाता नं- 705120110000225
IFSC कोड नं- BKID 0007051

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

साप्ताहिक पिघलता हिमालय हल्द्वानी

ग्लोबल वार्मिंग के कारण बर्फ पिघल रही और नदियां उफान पर, पर्यटकों का रुख

दारमा में आध्यात्मिक दृष्टि के अलावा एडवेंचर, ट्रैकिंग

इन दिनों में एक समाचार ने चिन्तित किया कि कैलास पर्वत के दक्षिणी हिस्से में बर्फ नहीं दिखी या कम है। इस पूरे अध्ययन से पता चलता है कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण बर्फ पिघल रही है और नदियां उफान पर हैं। दारमा घाटी वासी कहते हैं कि वह प्रकृति के पुजारी हैं और अपनी धरोहरों को सुरक्षित रखने में विश्वास करते हैं। विगत वर्ष से ग्लोबल वार्मिंग के कारण तेजी से बर्फ पिघल रही है। न्यौली गंगा भी इसी कारण उफान पर है। इस माह तापमान फिर से सामान्य होगा और बर्फ दिखाई देगी।

सीमान्त में तमाम सम्भावनाओं को देखते हुए क्षेत्रवासियों के अलावा सरकार की नजर है। होमस्टे कारोबार के साथ ही सामाजिक चिन्तन करने वाले उच्चाधिकारी अपने घर-गाँव से जुड़ रहे हैं, जिसने अनुभवों का लाभ क्षेत्र को होगा। भारतीय राजस्व सेवा से सेवानिवृत्त जीवन सिंह दुग्ताल बताते हैं कि सरकारी सेवा से निवृत्त होने के बाद वह देवभूमि कैलास दारमा में प्रकृति के विभिन्न अद्भुत रूप का आनन्द ले रहे हैं। आयकर विभाग (जीएसटी) में सहा.कमिश्नर श्री दुग्ताल भले ही 24 नवम्बर को सेवानिवृत्त हुए हो लेकिन उनका कवि और गीतकार मन हमेशा अपने पहाड़ पर रमता रहा है। अपने मूल ग्राम दुग्तू में रमते हुए वह बताते हैं कि- मुझे बचपन से ही अपने देवभूमि से लगाव रहा है। अब पुनः इस देवभूमि में रमकर रहना चाहते हैं। इन दिनों चारों ओर हरियाली व फूलों की घाटी कुट्टू के रंगीन गुलबी पौधे तथा फाफर के पीले पौंधे देखने को मिल रहे हैं। उनका मानना है कि दारमा घाटी निकट भविष्य में पर्यटकों के लिये एक मात्र आध्यात्मिक दृष्टि से नहीं एडवेंचर, ट्रैकिंग के लिये जाना जायेगा। इसके लिये वह जानकारी जुटाते हुए पर्यटकों के लिये पुस्तक तैयार कर रहे हैं जिसे D2S2 के बैनर में प्रकाशित किया जायेगा। जिसका मुख्य उद्देश्य सभी को दारमा के दर्शनीय स्थलों के बारे में जानकारी देना है।

दुग्ताल जी इन दिनों गाँव के पुराने मकान व निजी मन्दिर का निर्माण कार्य के अलावा कुछ खेतों को आवाद कर चुके हैं। खेतों में आलू, मटर, राजमा, सब्जियां खूब उग रही हैं। वह चाहते हैं कि नई पीढ़ी अपने घर-खेतों से जुड़ी रहे। इस दिशा में उन्होंने संगीत का भी सहारा लिया। Purdesh ro thade laun... का सृजन किया है जिसे यूट्यूब चैनल पुष्पा दुग्ताल के नाम से जारी कर चुके हैं। इस चैनल का उद्देश्यभी अपनी रं भाषा को सुरक्षित रखना है।

द्रोण सागर परिसर का निरीक्षण, नोटिस

काशीपुर। हाईकोर्ट के निर्देश पर उप जिलाधिकारी त्र द्रोण सामगर परिसर पर निरीक्षण में पाया कि इस जगह कई धार्मिक स्थल संचालित हैं। इस पर उन्होंने धार्मिक स्थल कमेटी संचालकों को नोटिस भेजने के निर्देश दिये। कहा कि धार्मिक स्थल संचालक से भूमि के अभिलेख आदि मांगे जा रहे हैं। असल में द्रोण सागर परिसर के मामले को पहले से चर्चा चल रही थी।

एसडीएम व तहसीलदार ने राजस्व टीम के साथ निरीक्षण में पाया कि पूरा परिसर गन्दगी से भरा है और कमेटी गठन कर संचालन हो रहा है। परिसर में द्रोण सागर कमेटी के नाम पर भूमिधरी अधिकार की भूमि के अलावा बंजर सरकारी भूमि व निजी भूमि भी दर्ज है। जिसमें कई धार्मिक संरचनाएं बनी हुई हैं और कमेटी गठित कर इन धार्मिक स्थलों का संचालन किया जा रहा है। अब तीर्थ द्रोणसागर में सुरक्षा की दृष्टि से पूरे परिसर में 25 सीसीटीवी कैमरे गाने की तैयारी है। परिसर में वाइकों से घूमने वालों पर भी लगाम लगाई जाएगी।

काले निशान को लेकर लालकुआ गरम

हल्द्वानी। लालकुआ में रेलवे प्रशासन की ओर से लगाए गए काले निशान का लेकर गर्मी है। निशान का विरोध करते हुए 25 सदस्यी संघर्ष समिति का गठन करते हुए आन्दोलन की रणनीति बना दी गई। क्षेत्रीय सांसद व विधायक से भी प्रतिनिधि मण्डल की मांग है कि वह लालकुआ में तोड़फोड़ बन्द करवाएं। काले निशान को लेकर गरम लालकुआ गौला रोड स्थित रेलवे क्रासिंग से पूर्व की ओर इन दिनों रेलवे प्रशासन व वन विभाग की ओर से अलग-अलग सर्वे किया जा रहा है। इसको लेकर 25 एकड़ मुख्य मार्ग के समीप सार्वजनिक स्थल में महापंचायत हुई।

इसमें सर्वसम्मति से 25 सदस्यीयी समिति का गठन करते हुए वक्ताओं ने कहा कि रेलवे विभाग द्वारा कथित अतिक्रमण के नाम पर सर्वे कर लोगों क दुकानों व घरों में काले निशान लगाए गये हैं। रेलवे प्रशासन तीन बार लोगों को मनमाने रूप से अतिक्रमण के नाम पर उजाड़ चुका है। अब इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यदि रेलवे को स्टेशन का विस्तार करना है तो वह अपनी रेल भूमि इण्डियन ऑयल की तरफ करें। वन विभाग जीपीएस के नाम पर वन भूमि तलाश कर रहा है।

जौलजीवी प्राथमिक स्वास्थ्य बेहाल है

जौलजीवी। क्षेत्र में प्राथमिक स्वाथ्य केन्द्र बेहाल हो चुका है। इसमें न वार्ड बॉय है और न स्वच्छक तैनात हैं। ऐसे में अस्पताल आने वाले मरीजों के साथ ही स्टाफ को दिक्कत हो रही है। विद्युत कनेक्शन न होना भी कर्मचारियों और मरीजों को बेहाल कर रहा है। तीलू रौतेली पुरस्कार से सम्मानित समाजसेवी शकुन्तला दताल ने मुख्यमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री को पत्र भेजकर स्वास्थ्य केन्द्र के हालातों से अवगत कराया है। उनका कहना है कि लम्बे संघर्ष के बाद इस केन्द्र की स्थापना हुई। पचास से अधिक गाँवों के लोग जाँच और उपचार के लिये इस अस्पताल में आते हैं लेकिन स्वच्छता न होने, विद्युत सुविधा न होने, वार्ड बॉय न होने से व्यवस्था चरमरा चुकी है। जिसे दुरुस्त किया जाना चाहिये।

सुल्तानपुर पट्टी नाम बदलने का विरोध

बाजपुर/काशीपुर। नगर पंचायत सुल्तान पुर पट्टी का नाम बदलकर कौशल्यापुर किए जाने के शासनादेश के खिलाफ लोगों का विरोध तेज हो गया है।

नगर पंचायत के वार्ड सभासदों और स्थानीय जन प्रतिनिधियों ने उत्तराखण्ड के नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य को एक ज्ञापन सौंपकर इस फैसले का तीव्र विरोध दर्ज कराया।

ज्ञापन में सभासदों ने स्पष्ट कहा है कि सुल्तानपुर कोई नया या विवादित नाम नहीं है, बल्कि यह ऐतिहासिक और सामाजिक पहचान से जुड़ा नाम है। जिसे वर्षों से क्षेत्रवासी अपनाते आए हैं। यह नाम स्वतंत्रता सेनानी एवं समाजसेवी सुल्तान सिंह की स्मृति से भी जुड़ा हुआ है। जो यहाँ की सांस्कृतिक और गौरवशाली धरोहर का प्रतीक है। ज्ञापन देने वालों में सभासद जोनी मौर्य, जाहिद हुसैन, शमीम खाँ, एजाज हुसैन, मोहम्मद रफी आदि थे। उल्लेखनीय है कि धामी सरकार ने पिछले दिनों कई स्थानों के पुराने नाम बदल डाले। इसके बाद से चर्चा होने लगी थी कि एकाएक क्या हो रहा है।

बेरीनाग में गुलदार की चहलकदमी

बेरीनाग। नगर क्षेत्र सहित आसपास गुलदार की चहलकदमी से लोगों में भय है। ऐसे में लोग सायं होते ही घरों पर दुबक जाते हैं। त्रिपुरादेवी, क्वेराली, भट्टीगांव, छलेड़ी, धनौली, कल्लूखान क्षेत्र में गुलदार का डर बना हुआ है।

नौलों के संरक्षण की अपील

अल्मोड़ा। नगर निगम और हिसालु संस्था की ओर से नगर के प्राकृतिक नौलों के संरक्षण को अभियान की शुरुआत की गई है। धूणी मन्दिर वार्ड में स्थापित नौले की सफाई के साथ अभियान शुरू करते हुए सभी से नौलों के संरक्षण में आगे आने की अपील की गई। इसमें पार्षद मीना मिश्रा, आशीष गुरुरानी, अभिषेक जोशी, कैलाश गुरुरानी मौजूद थे।

मड़कनाली-गनतोला सड़क बनाई जाए

गंगोलीहाट। मड़कनाली से गनतोला तक सड़क निर्माण की मांग को लेकर क्षेत्र वासियों ने एसडीएम को ज्ञापन सौंपा है। पूर्व में कई बार अपनी इस मांग को लेकर उठा चुके लोगों ने कहा कि सड़क न होने से ग्रामीणों को दिक्कत का सामना करना पड़ता है। यदि उनकी मांग नहीं सुनी गई तो आन्दोलन किया जायेगा।

पांखू में जन्माष्टमी की विशेष तैयारी

थल। पांखू के रामलीला मैदान में 16 अगस्त को कृष्ण जन्माष्टमी के लिये विशेष्ज्ञ तैयारी हो रही है। विभिन्न स्कूलों के बच्चों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियां और प्रतियोगिता होनी है।

परिक्रमा

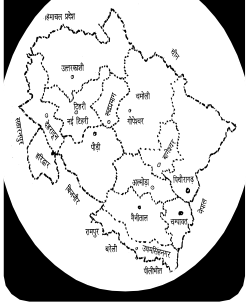

सुलभ शौचालय बन्द होने से यात्री परेशान

रानीखेत। रोडवेज स्टेशन स्थित सुलभ शौचालय बन्द होने से यात्रियों खासकर महिलाओं को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। गन्दगी फैलने से व्यापारियों ने भी रोष जताया है। सुरम्य नगरी से होकर सैकड़ों वाहन गुजरते हैं और यात्री व पर्यटकों का आना-जाना होता रहता है लेकिन पिछले कई दिनों से बन्द शौचालय के कारण जिस प्रकार की दिक्कतें हो रही हैं उससे इस स्वच्छ स्टेशन के बारे में गलत सन्देश जा रहा है। व्यापारियों ने साफ-सफाई के साथ शौचालय खोलने की मांग की है।

माधो सिंह जंगपांगी के नाम पर कालेज

डीडीहाट। अटल उत्कृष्ट राजकीय इण्टर कालेज का नाम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी माधो सिंह जंगपांगी के नाम पर होगा। सीएम ने इसके लिये स्वीकृति प्रदान की है। देहरादून में राज्य के कई क्षेत्रों में विकास योजनाओं की मंजूरी के दौरान सीएम पुष्कर सिंह धामी ने यह स्वीकृति दी। क्षेत्रवासियों ने इसके लिये सीएम का आभार करते सेनानी परिवार को भी बधाई दी है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

महाभारत में धर्म.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

अलावा अभिमन्यु हि पाण्डव पक्ष के उल्लेखनीय योद्धा थे और वे मारे गए। दिलचस्प यह है कि वे पाँचों छल से मारे गए। बल्कि पहले चार योद्धा तो तब मारे गए जब वे निहत्थे थे। शिखंडी को सामने देखकर भीष्म ने हथियार रख दिये तब धोखा देकर उन्हें मारा गया। भीष्म जानते थे कि बाण शिखण्डी के नहीं अर्जुन के हैं- अर्जनस्य इमे बाणा: नेमे बाणा: शिखण्डिन:। पर वे अपने आदर्श की आन पर हथियार फेंककर खड़े रहे और और अर्जुन ने उन्हें बाणों की सेज पर लिटा दिया। अभिमन्यु को तो छह-छह महारथियों ने घेरकर बर्बरता पूर्वक मारा। द्रोण को भी मारने से पहले निहत्था कर दिया गया और उन्हें निहत्था करने में युधिष्ठिर ने अपने जीवन भर की सत्य की पूँजी एक धीमे से बोले गए झूठ पर कुर्बान कर दी। कर्ण तो निहायत नियमविरुद्ध छल से मार दिए गए। दुर्योधन को वहाँ गदा मारी गई, जहाँ मारने का विधान गदायुद्ध में नहीं होता। शायद आजकल बॉक्सिंग में भी नहीं होता। अर्थात मामला धर्म या अधर्म का नहीं था। युद्ध जीतना खालिस लक्ष्य था। इस लिए हर उस योद्धा को, जैसे भी हो मार डाला गया जिसका न मरना शुत्रु को दिन के तारे दिखा सकता था।

पाण्डवों को यह कुकर्म कई बार करना पड़ा, क्योंकि कोरवों की ओर अजेय किस्म के योद्धा ज्यादा थे। अगर कोई दुर्योधन को समय पर सुझा देता तो वह भी भीष्म को वर्जित स्थान पर गदा मारकर लिटा देते, जैसे भीम ने उन्हें लिटा दिया। कर्ण का बस चलता तो वह अर्जुन को छोड़ते नहीं। उन्हें तो बस मौका ही नहीं मिला। तो कैसे फैसला करें कि किस पक्ष ने धर्मयुद्ध किया? जब महान योद्धाओं को छल से मारा गया तो दूसरे, तीसरे, चौथे दर्जे के लोग कैसे मारे गए होंगे? इसकी कल्पना कर सकते हैं। इसलिए कहने का साहस नहीं होता कि दुर्योधन के पक्ष में अधर्म था और धर्म का पलड़ा पाण्डवों की ओर झुका था। राजसिंहासन पर दावा स्पष्ट नहीं। युद्ध में सहारा छल का लिया गया। फिर क्या इसीलिए पाण्डवों का पक्ष धर्म मान लें कि वे राजा बनने के लिए बचे रहे गए? सचमुच व्यास को एक बड़ा रैफरी मानना होगा। जिन्होंने ऐसे करतब भर मैच खिलाया कि पाँच हजार साल बाद भी फसला करना मुश्किल हो रहा है।

(साभार नवभारत टाइम्स)

केदारघाटी में डिजिटल मैपिंग करेगा यूकाडा

देहरादून। उत्तराखण्ड नागरिक उड्डयन विकास प्राधिकरण (यूकाडा) इण्डियन स्पेस रिसर्च आर्गनाइजेशन (इसरो) के साथ मिलकर केदारघाटी की डिजिटल मैपिंग करेगा। इससे न केवल हेली उड़ानों को नियंत्रित और सुरक्षित बनया जा सकेगा बल्कि यह आपदा प्रबन्धन में भी खासी सहायक होगा।

इसके साथ ही यूकाडा सीमान्त क्षेत्रों में सीमाओं की सुरक्षा को और अधिक मजबूती देने के लिये सेना के साथ मिलकर हेलीपैड भी तैयार करेगा।

इस बीच सचिवालय में सीएम ने नागरिक उड्डयन विभाग की बैठक में का चारों धामों के लिये नियमित चार्टर्ड हवाई सेवा शुरू होगी।

------स्मृतियाँ------

यशवन्त सिंह

कुंवर सिंह धर्मशक्तू

'पिघलता हिमालय' अपनी स्थापना के 48वें वर्ष में प्रवेश करते हुए अतीत के दिनों को भी याद कर रहा है। इसकी बुनियाद में वह लोग हैं जिन्होंने अपने समाज के लिये हमेशा तरक्की का रास्ता सोचा। आज फिर से ऐसी ही दो विभूतियों का स्मरण किया जा रहा है-

एडवोकेट यशवन्त सिंह जी सन् 1961 में डीएसबी कालेज नैनीताल छात्र संघ के सचिव थे जब पि.हि. के संस्थापक दुर्गासिंह मर्तोलिया कालेज यूनियन के अध्यक्ष बने। रामगढ़(नैनीताल) के यशवन्त सिंह जी विवेकानन्द मिशन के अलावा हल्द्वानी की तमाम संस्थाओं से जुड़े थे। सामाजिक मुद्दों के साथ ही पिघलता हिमालय परिवार की चिन्ता करने वालों में अग्रणीय थे। इनका परिवार आनन्द बाग, बद्रीपुरा में रहता है। इनके सुपुत्र एडवोकेट संकल्प सिंह भी तनमयता से जुटे हैं।

कुंवर सिंह धर्मशक्तू जौलजीवी में कुशल उद्यमी के रूप में जाने जाते थे। अपनी पुस्तैनी परम्परा को आजीवन बनाए रखने वाले कुंवर सिंह जी दन-कालीन बुनावट में महारथ के अलावा सच्चे और सीधे व्यापारी थे। अपनों को अपने प्रिय पत्र पिघलता हिमालय से जोड़ने के लिये वह हमेशा तत्पर रहे। इनका परिवार जौलजीवी के सामाजिक कार्यों में जुड़ा है। इनके सुपुत्र धीरेन्द्र धर्मशक्तू व्यापार संघ अध्यक्ष के अलावा तमाम सामाजिक गतिविधियों में अग्रणीय हैं।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की गाथा

कुलपति नेगी का हटना और लोहनी का कुलपति बनना

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय का विवादों से नाता हमेशा रहा है। बेहद चर्चा में रहे कुलपति ओम प्रकाश नेगी को काफी कहा-सुनी के बाद हटना पड़ा और नए कुलपति नवीन चन्द्र लोहनी की नियुक्ति हो गई। चौधरी चरण सिंह विवि मेरठ में हिन्दी के विभागाध्यक्ष प्रो. लोहनी नरेन्द्रनगर, चम्बा, खुर्जा के महाविद्यालयों में कार्य कर चुके हैं। पचार, बागेश्वर के लोहनी जी की नियुक्ति पर नई उम्मीद है और उनके लिये भी चुनौती होगा कि इस विवि पर कोई धब्बा न लगे।

बताते चलें कि हमेशा से चर्चा में रहे इस विवि में सर्वाधिक चर्चित कुलपति ओम प्रकाश नगी रहे। पिछले दिनों विवि के ही प्रोफेसर भूपेन सिंह ने सचिव को पत्र लिखकर अवगत कराया कि 67 साल की उम्र पूरी कर चुके नेगी जी नियुक्ति होना कुलपति की अधिवार्षिता आयु 65 साल का अवैध कारनामा है। प्रो. सिंह ने साहस पूर्ण पत्र में बिन्दुवार बखिया उधेड़ कर रखते हुए भ्रष्टाचार का आरोप लगाया, जो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। यही सब कहासुनी के दिनों में प्रो. नेगी को हटाकर प्रो. नेगी को कुलपति नियुक्त किया गया।

प्रो.सिंह ने उन पर खुला आरोप लगाया कि विवि के कुलपति ने उच्चशिक्षा विभाग ओर कुलाधिपति कार्यालय को गुमराह कर या कुछ भ्रष्ट लोगों के साथ जोड़तोड़ कर इस अवैध प्रक्रिया को अंजाम दिया है। यह भी आरोप लगाया कि कुलपति ने विवि में बड़े पैमाने पर नियुक्तियों में भ्रष्टाचार किया है। इस सिलसिले में कई बार राज्य सरकार और कुलाधिपति को सूचित किया गया था। बताया कि न्यायालय में भी नेगी के कार्यकाल में हुई गड़बड़ियों को लेकर तीन मुकदमे दर्ज हैं। जिसमें अवैध नियुक्ति का मामला स्वयं भूपेन सिंह ने दर्ज किया। ऐसे में कुलपति उन्हें लगातार प्रताड़ित करने लगे।

मामला गरमागरम है। देखना अभी आगे क्या कुछ होता है। नये कुलपति हालातों को कितना संभाल पाते हैं।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क-
05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हिमालया इण्टर कालेज चकोड़ी

शिक्षा के नवाचार में अग्रणीय

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

'लाल निशान' हल्द्वानी में तूफान बन चुका है और नेता बलवान बन घूम रहे

पुराने नक्शे खंगाले जा रहे हैं

मानसून में छत नहीं तोड़ी जाएगी

आवास विकास में नाराजगी

रेलवे भूमि पर होनी है कार्रवाई

हल्द्वानी। अतिक्रमण हटाने के लिये प्रशासन द्वारा लगाए जा रहे 'लाल निशान' हल्द्वानी में तूफान से दिखाई दे रहे हैं और इनकी आड़ में नेता बलवान बन घूम रहे हैं। कब्जे हटेंगे या क्या होगा यह बाद की बात है लेकिन नेता चाहे वह किसी पक्ष का हो उन्हें अवसर भुनाने का मौका जाता है। हल्द्वानी में लाल निशान लगाने की यह परम्परा जिलाधिकारी रहे सूर्यप्रताप सिंह के समय पर चली। एसपी सिंह ने नैनीताल रोड पर असरदार लोगों के कब्जे हटाते हुए अपनी ताकत को बता दिया था। भाजपा-कांग्रेस के बड़े नेता भी डीएम को देख दूर भागते दिखाई दिये थे और आम जनता ने डीएम के समर्थन में ताकत दिखाई थी। जिन जगहों पर अतिक्रमण था, कब्जा हटाने के लिये लोग अपने आप जुट गये थे। एसपी सिंह को आज भी हल्द्वानी याद करता है।

वर्षों बाद अब जबकि हल्द्वानी को संवारने के लिये भारी बजट के साथ काम होना है जिलाधिकारी वन्दना सिंह बहुत ही समझदारी से काम ले रही हैं। प्रशासन के काम के बीच वर्तमान की लाचारी भी साफ दिखाई देती है। बात-बात पर उपजे नेताओं की अगुवाई में प्रदर्शन और बेवजह के पत्रकार मोबाइल उठाए सड़कों पर दिखाई देते हैं। ऐसे में जनप्रतिनिधियों के अलावा उभरते नेता बलवान दिखाई देने लगते हैं। सोशल मीडिया के द्वारा बयान देने की परम्परा से उन्हें यह लगने लगा है कि वह वजनदार हो चुके हैं।

शहर में सड़कों के चौड़ीकरण के साथ चौराहों के फैलाव पर काम हो रहा है। सबसे मुख्य चौराहा कालाढूंगी चौराहे पर मन्दिर शिफ्ट होने से खुला दिखाई दे रहा है। इस बीच नवनिर्माण की आड़ में बिना अनुमति के कार्य करा रहे कारोबारियों पर प्राधिकरण ने सख्ती भी की है। शिकायत मिलने पर शारदा मार्केट में हो रहे निर्माण को तुड़वा दिया गया। प्रशासन द्वारा पुराने नक्शों को खंगाला जा रहा है ताकि बरसात में पानी की निकासी के रास्ते खोले जा सकें। जिन स्थानों पर कब्जा कर लिया गया है उन्हें चिन्हित कर हटाया जाए।

बरसात के दिनों में अतिक्रमण हटाने से आम जनता को दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में शासन की ओर से कहा गया है कि मानसून तक राहत दी जाए। प्रशासन भी इस बात को मान चुका है लेकिन 'लाल निशान' का क्रम जारी है। ऐसे में उन लोगों का चिन्तित होना स्वाभाविक है जिन्होंने अपनी पूंजी इस शहर में जमीन खरीदने मकान बनाने में लगाई है।

राजपुरा क्षेत्र में कई घरों में प्रशासन की ओर से लाल निशान लगाए जाने के बाद विधायक सुमित हृदयेश ने लोगों से मुलाकात की और उन्हें भरोसा दिलाया कि इस मुश्किल समय में उनके साथ हैं। विधायक ने कहा कि किसी भी कार्रवाई से पहले जनता को विश्वास में लेना जरूरी है। उन्होंने प्रशासन से अपील की कि ऐसे मामलों में पारदर्शिता और सम्वेदनशीलता बरती जाए। कहा कि 1930 के नक्शे के आधार पर आज के समय में घरों पर कार्रवाई करना सरासर गलत है और इसे किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। कहा इस मामले को विधानसभा में उठाएंगे। लोगों के जीवनभर की कमाई के बाद बनता है और उसे इस तरह से तोड़े जाने की बात कहना गलत है।

कांग्रेसी नेता ललित जोशी ने आवास विकास, लालडांट, राजपुरा आदि क्षेत्रों में लाल निशान लगाने को लेकर कहा कि नालों के पास से अतिक्रमण हटाने को प्रशासन एक समान नियम लागू नहीं कर रहा है। उन्होंने कहा कि नालों के पास कहीं 50 फुट तक निर्माण को अवैध करार दे लाल निशान लगाए गए हैं लेकिन कुछ जगह ऐसी हैं जहां नालों से एकदम सटकर नक्शे स्वीकृत किए गए हैं।

फिलहाल चुनाव की फिसलन और हल्द्वानी में लाल निशान का खेल बदस्तूर जारी है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)